यह प्रश्न-पत्र एवं उत्तर पुस्तिका संयुक्त है।

जय गुरु नाना | **जय महावीर** | **जय गुरु राम**

श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, बीकानेर

जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा-2018

समय : 3 घण्टे
12:30 से 3:30 बजे तक

प्रश्न-उत्तर पत्र भाग – 4

नाम.. पिता/पति का नाम..

शहर का नाम............................ जन्मतिथि.................... मोबाइल......................... रोल नं ....

नोटः-सभी प्रश्नों के उत्तर, दिये गये निर्देशों के अनुसार, निर्धारित स्थान पर, इसी प्रश्न पत्र में लिखें। उत्तर पुस्तिका जाँचने पर यदि यह पुष्टि होती है कि परीक्षार्थी ने दूसरे का सहयोग लिया है अथवा एकाधिक पुस्तिकाओं के उत्तर समान है तो उसे नकल किया हुआ मानकर परिणाम निरस्त कर दिया जावेगा। केन्द्र अधीक्षक उपरोक्त प्रश्नोत्तर पुस्तिका परीक्षा समाप्ति के अगले दिन श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड़, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) के पते पर भिजवावें।

1- lerk lLdkj ikB'kkyk d fo|kFkh gk A ¼ ½

2- 97 vd ,o lkekf;d dju okys 3 vd çkIr dj ldr gA ¼ ½

प्रश्न 1. संक्षेप में उत्तर दीजिए– **15**

1. द्रव्य लेश्या किसे कहते है ?

....

....

2. श्रावक का तीसरा मनोरथ क्या है ?

....

....

3. धर्म कार्य में क्या नहीं करना चाहिए।

....

....

4. ऋषभदेवजी का शरीर कितने अतिशयों से युक्त था, कोई 2 लिखो।

....

....

5. ब्राह्मण कौन कहलाता है ?

....

....

6. ढंढण मुनि ने क्या अभिग्रह किया ?

.....

.....

7. शुद्धि किसे कहते है ?

.....

.....

8. 67 बोल में से 45 वां बोल कौन सा है, लिखिए।

.....

.....

9. भावना किसे कहते है ?

.....

.....

10. प्रतिक्रमण क्यों किया जाता है। एक कारण बताओं।

.....

.....

11. आसन छोड़कर कौन-कौन-सी क्रिया करनी चाहिए।

.....

.....

12. ''वणकम्मे'' को परिभाषित करो।

.....

.....

13. अरिहंत भगवान के कोई 4 गुण लिखिए।

.....

.....

14. दूसरे, पांचवे, छठे आवश्यक के नाम लिखिए।

.....

.....

15. दूसरे व्रत को चौथा अतिचार लिखिए।

.....

.....

प्रश्न 2. भावार्थ लिखो– **6×2=12**

1. इच्छामि णं भंते तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे देवसिय पायच्छित्त विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं।

.....

.....

2. अकाले कओ सज्झाओं, काले न कओ सज्झाओ, असज्झाइए सज्झाइयं सज्झाइए न सज्झाइयं।

.....

.....

3. चउव्विहे अण्ट्ठादंडे पण्णत्ते तं जहा. अवज्झाणायरिए, पमायायरिए, हिंसप्पयाणे, पावकम्मोवए से।

.....

.....

4. रागेण व दोसेण व, अहवा अकयण्णुणा पडिवेसेणं।

.....

.....

5. खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे।

.....

.....

6. तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

.....

.....

प्रश्न 3. निम्न गाथाओं को पूर्ण करो **1½×12=18**

1. गंठिसहियं, मुट्ठिसहियं .....

..... तिविहंपि चउविहंपि ।

2. सव्वस्स समणसंघस्स, ...

सव्वं ..... अहयं

3. परमव्थसंथवो ..... वावि

..... सामत्तसद्धहणा।

4. जत्ता भे जवणिज्जं .....

..... आवस्सियाए।

5. कन्नालीए गवालीए .....

..... का पच्चक्खाणं।

6. पच्चक्ख कर जं पि य .....

..... भण्डकरण्डसमाणं।

7. रात गंवाई .....

..... बदले जाय।

8. सौतेली माँ .....

..... बन कर्ज भरा।

9. मैंने नहीं .....

..... तप भी किया।

10. वक्तु गुणान् .....

..... प्रतिमोपि बुद्धया ?

11. दृष्टवा भवन्त .....

..... जनस्य चक्षुः।

12. कुन्दावदात .....

..... धौत कान्तम्।

प्रश्न 4. खाली स्थान भरो- **20**

1. नम्र वृत्ति वाला, चपलता, विशिष्ट पत करने वाला शुभ भावों से युक्त जीव.....में परिणत होता है।

2. .....एक विशिष्ट पत है, ...दुर्गति का कारण है।

3. जैन धर्म में.....और.....दोनों का कला बताई हैं।

4.....ठगने के लिए, वैराग्य को धारण किया।

5. त्वा मव्ययं विभु .....मसंख्य माद्यं।

6. भरत एंव बाहुबली को.....का बोध दिया।

7. .....की सौम्यता के समक्ष .....की क्रूरता परास्त हो गई।

8. ढंढण मुनि .....को शांतिपूर्वक सहन करते है।

9. .....शरीर मिले, ...शरीर मिले।

10. .....स्थानांग, समवायांग आदि के धारक।

11. .....की प्रभावना करने से तीर्थंकर पद की प्राप्ति होती है।

12. सांसारिक सुखों से हटकर मोक्ष सुख की आभिलाषा होना .....हैं।

13. सुदेव, सुगुरु .....की सत्यता के विषय में संदेह करना.....हैं।

14. अनेक प्रकार के जिनशासन की ख्याति बढाना .....है।

15. चारित्र धर्मरूपी ..... के लिए सम्यक्तव रूपी भाजन हैं।

16. .....कुतीर्थियों की संगति से दूर रहना।

17. ..... अनेक ग्रंथो के जानकर तथा .....कोई विवाद में धुलने में समर्थ नहीं है।

18. फसंतु त्ति कट्टु एवं पियणं.....वोसिरामि।

19. .....अहोदिसिपमाणाइक्कमे, तिरियदिसिपमाणाकम्मे।

20. सदारसंतोसिए.....पच्चक्खामि जावज्जीवाए।

प्रश्न 5. मिनींग लिखो- **7**

1. मज्जण विहि .....

2. सूवविहि .....

3. पोरिसियं .....

4. जीव रासिस्स .....

5. अंजलि .....

6. सत्यनायगे .....

7. पित्तिय .....

8. वन्नग .....

9. खेत्तवुड्डी .....

10. तक्करप्पओगे .....

11. पेयाला .....

12. पंचण्हमणुव्वयाणं .....

13. गण .....

14. बहुश्रुत .....

प्रश्न 6. अंकों में उत्तर दीजिए– **10**

1. भूषण के बोल कितने है।

2. जीव कितने कर्मों का विनाशक है।

3. 67 बोल में तपस्वी का बोल कौन से नम्बर का है।

4. तीर्थंकर पद प्राप्ति के कितने बोल है।

5. मरूदेवी माता ने कितने महाराज देखे।

6. राजगृह नगर में कितने युवकों की टोली थी।

7. भगवान महावीर ने कितनी वर्ष में दीक्षा ली।

8. तिरचीं पंचेन्द्रिय में कितनी लेश्याएं होती है।

9. संथारा कितनी प्रकार का होता है।

10. धर्म लेश्लाएं कितनी होती है।

प्रश्न 7. सही या गलत बताइये **15**

1. बिना विचारे काम करने वाला नील लेश्या का परिणाम है। ( )

2. सिद्ध भगवान सलेशी होते हैं। ( )

3. संथारा लेने वाला खुले मुंह बोल सकता है। ( )

4. संथारा लेने वाला तत्काल मरना चाहता है। ( )

5. वनस्पति में 4 लेश्या होती है। ( )

6. तितिक्षा ही परम धर्म है। ( )

7. ढंढण मुनि अवधि ज्ञान अवधि दर्शन प्राप्त कर केवलियों की परिषद् में बैठ गए। ( )

8. श्रेष्ठ धर्म क्रियाओं में परम प्रीति होना धर्मराग है। ( )

9. सम्यक्त्व का अतिचार सहित पालन करने से तीर्थंकर पद की प्राप्ति होती है। ( )

10. जीव धर्मसाधना करके देवलोक में जाते है, वहां सुख भोगते हैं फिर आयु पूर्ण करके मनुष्यभव में आते है। ( )

11. मतिज्ञान की भक्ति से तीर्थंकर पद की प्राप्ती होती है। ( )

12. सम्यग् दर्शन, सम्यग् ज्ञान, सम्यग् चारित्र, सम्यगतप ये मोक्ष के उपाय है। ( )

13. जिनोक्त सिद्धान्तों को गद्य–पद्य में रचने वाले कवि है। ( )

14. परमार्थ का परिचय करना परमार्थ सेवन है। ( )

15. अनंतानुबंधी क्रोधादि का उदय न होना उपशम है। ( )